यहाँ हुए सत्संग, जाप, पाठ और इसके सुफल के समर्पण की प्रार्थना

""

परमात्मा श्री राम एवं प्रातः स्मरणीय, नित्य और हर पल हमारे अंग - संग रहने वाले परम पूजनीय गुरुजनों , यहाँ विराजमान एवं युगों युगों से विचरण कर रहीं अनेक दृश्य - अदृश्य आध्यात्मिक शक्तियों के पावन श्री चरणों में असंख्य बार साष्टांग दण्डवत् प्रणाम् अर्ज है। उनकी पावन चरण रज तथा श्री चित्रकूट धाम की दुर्लभ रज के प्रत्येक कण को हम सब बारम्बार प्रणाम् अर्ज करते हैं। बारम्बार नमन् स्वीकार कीजिये प्रभु जी।।

आपकी कृपा, दया और सूक्ष्म मार्गदर्शन के बिना इस सुंदर, अविस्मरणीय सत्संग समागम की कल्पना करना भी असंभव था।

हे प्रभु जी!

विश्व में फैली अशांति व युद्ध की विभीषिका को रोकने एवं जनधन की हानि को रोकने के लिए तथा शांति, समृद्धि, श्रेष्ठता, आस्तिक भाव में वृद्धि , शुभ मंगल,सद्धर्म, राम नाम, मानवीय मूल्यों और सद्गुणों के विस्तार आदि सात्विक, पावन उद्देश्यों को निमित्त बनाकर हुई निष्काम प्रार्थना के साथ, आपने यहाँ चित्रकूट धाम में 11 से 14 अप्रैल 2026 के, श्रीरामशरणम् परिवार के इस चार दिवसीय अनुपम सत्संग समागम को निर्विघ्न रूप से,भावचाव के साथ सानन्द संपन्न करवाया है और हम सभी के लिए अविस्मरणीय बनाया है।

इसमें 11 अप्रैल को भजन कीर्तन, 12 घंटे का अखण्ड जाप , 12 अप्रैल से आज 14 अप्रैल तक श्री सुंदरकांड जी की 21 आवृत्तियों के अखण्ड पाठ , श्री अमृतवाणी सत्संग आदि के रूप में एवं अभी थोड़ी देर बाद होने वाली इच्छुक जनों की नामदीक्षा के रूप में आपकी अनवरत् कृपा और आनन्द की अकूत बरसात हो रही है। इसके लिए आपका जितना धन्यवाद किया जाये, बहुत कम है।

महाराज जी! सर्वथा अयोग्य होते हुए भी हम लोगों को इस अद्वितीय आध्यात्मिक साधना वाले दुर्लभ सुयोग को उपलब्ध कराने के लिए हम सभी आपके चिर ऋणी रहेंगे।

यहाँ हुए जाप, पाठ, साधना का जो भी पुण्य और सुफल हो, वह सब आपके श्री चरणों में इस अनुरोध के साथ, निष्काम भाव से समर्पित है कि विश्व शांति के लिए की गई प्रार्थना स्वीकार कीजिये एवं जो सकारात्मक ऊर्जा, आंतरिक बदलाव की पूंजी आपने यहाँ हमें दी है, वह अक्षुण्ण बनी रहे। घर जाकर हम उसे अपने नकारात्मक कार्यकलापों से समाप्त करने के बजाय उस पूंजी को और अधिक बढ़ाने में सफल हों। वह कभी नष्ट नहीं होवे। ऐसी कृपा और दया करो प्रभु जी। कृपा करो, कृपा करो, कृपा करो।

_प्रभु जी! हम लोग तो सदैव की भांति सांसारिक मोह माया, लोभ - लालच, अहंभाव व अनेकानेक दुर्गुणों की दलदल में आकण्ठ डूबे हुए निरीह प्राणी हैं। दिखावा, नाटकीयता, प्रदर्शन, गंदे - मंदे होते हुए भी स्वयं को बड़ा व अच्छा और अन्य को छोटा व निकृष्ट मानना -- यह हमारे रुटिन लाईफ और दिनचर्या का अंग है, स्वभाव में बस गया है। बचने की लाख कोशिशों के बाद भी हम इन सबमें डूबते ही जा रहे हैं। रात दिन इनमें बढ़ोत्तरी ही हो रही है। पता नहीं क्यों हम अनेक प्रत्यक्ष दुर्गुणों, अयोग्यताओं के होते हुए भी आत्ममुग्धता के विष से स्वयं को मुक्त नहीं कर पा रहे हैं।

रामजी आप कृपा करके हमारे हृदय चक्षुओं को खोलकर हमें हमारी असलियत से, कमियों से हर समयअवगत कराते रहने की कृपा करिये , यह बहुत जरूरी है।

सारी अयोग्यताओं, अक्षमताओं के होते हुए भी आपने हमें इस अनुपम सत्संग समागम में सम्मिलित होने का दुर्लभ अवसर प्रदान किया है, यह आपकी अहैतुकी कृपा ही है।

यहाँ की दिव्यता और उसमें छिपी भव्यता ने हमें मोह लिया है। ऐसी कृपा करो कि यह सम्मोहन क्षणिक न होकर स्थाई भाव वाला हो। श्री सुंदरकांड जी का पाठ और उसकी सुंदरता सदैव हमारा मार्गदर्शन करते रहें।_

अनुरोध है कि आपकी कृपा और आशीर्वाद का अप्रत्यक्ष वरद् हस्त तो हमेशा हमारे ऊपर रहता ही है। इस बार तो प्रत्यक्ष हाथ भी हम सबके ऊपर सदैव विद्यमान रहा है। और यह किसी चमत्कार जैसा ही लगता है।

जगद्जननी माँ सीता को दोनों हाथ जोड़कर भाव पूर्वक प्रणाम करते हुए हनुमत लला का यहाँ स्थापित विशाल चित्र मूलतः श्री सुंदरकांड जी की पुस्तक का अंश है ,जिसे आयोजकों ने फ्लैक्स बनाने के लिए दिया था। लेकिन ऊपर स्थापित विशाल चित्र में एक अन्य हाथ भी मां के चरणों की ओर स्पष्ट इंगित करते हुए दिख रहा है।यह हाथ सुंदरकांड जी में लगे चित्र में नहीं है।

इसका तकनीकी कारण जो भी हो लेकिन हम सभी पूरे विश्वास और श्रद्धापूर्वक यह मानते हैं कि यह आपकी कृपा रूपी वरदहस्त ही है जो प्रथम बार चित्र में इस प्रकार प्रकट हुआ है।

कृपया अपना वरदहस्त हम सब पर इसी प्रकार सदैव बनाये रखिये प्रभु जी।

यहाँ अखण्ड जाप में अनेक साधक भाई बहिनो ने बड़ी संख्या में राम नाम का जाप किया है। श्री सुंदरकांड जी के अखण्ड पाठ में भी साधकों ने कई व्यक्तिगत पूरे पाठ भी किये हैं।

विनम्रतापूर्वक ये सब आपके श्री चरणों में निष्काम भाव से सादर समर्पित है। कृपया स्वीकार करने की कृपा कीजिये। साथ ही जाप, पाठ एवं साधना में जाने अनजाने भूलें व त्रुटियां भी हुई होंगी। भूलें करना हमारा स्वभाव ही बन गया है। कृपया उन्हें भी क्षमा करने की कृपा कीजिये।

कृपा करो, दया करो। कृपा करो। कृपा करो। कृपा करो।सदैव अपनी चरण शरण में ही रखो। कभी भी इससे विलग नहीं करना प्रभु जी।

कुछ शब्द आभार और क्षमा याचना के रूप में भी निवेदन हैं।

श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट दिल्ली ने श्रीरामशरणम् सत्संग समिति, अयोध्या धाम को इस कार्यक्रम के लिए सतत् मार्गदर्शन एवं अनुमति देने की कृपा की तथा श्री सद्गुरु सेवा ट्रस्ट द्वारा उदारता पूर्वक यह सत्संग हॉल व निवास हेतु अपने सभी भवनों को सहज ही उपलब्ध करा दिया। इसके लिए हम सभी श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट दिल्ली तथा सद्गुरु सेवा ट्रस्ट, जानकी कुण्ड एवं यहाँ के पदाधिकारियों व सेवा सहयोगियों का हृदय से धन्यवाद करते हैं।

यहाँ दूर दूर से पधारे सभी साधक भाई बहनों का भी हृदय से धन्यवाद है।

अनेक असुविधाओं, परेशानियों के होते हुए भी सभी ने उन्हें अनदेखा करते हुए, यथासंभव अनुशासन का पालन करते हुए, जगद्जननी माँ सीता और महावीर हनुमान जी की जीवंत सी दिखने वाली इस विशाल छवि की छत्रछाया में रहते हुए सत्संग का लाभ लिया है। एवं निरंतर इस सुंदर छवि के दर्शन करते हुए जगतजननी माँ का प्रत्यक्ष आशीर्वाद भी प्राप्त किया है।

सभी आगंतुक भाई बहिनों एवं अनथक सेवा करने वाले साधक भाई बहिनों का भी हृदय से आभार।

परमात्मा कृपा करें ऐसे अवसर बार बार मिलते रहें।

यहाँ रहने के दौरान साधकों को असुविधा व परेशानी भी हुई होगी। इसके लिए सत्संग समिति सभी से विनम्र क्षमायाचना करती है। कृपया क्षमा कीजिये।

पुनः सभी का बारम्बार धन्यवाद।।